

PAPER-III
COMPARATIVE STUDY OF RELIGIONS

Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) _____

(Name) _____

2. (Signature) _____

(Name) _____

Roll No.

--	--	--	--	--	--	--	--

(In figures as per admission card)

Roll No. _____

(In words)

D 6 2 1 1

Time : 2 1/2 hours]

[Maximum Marks : 200

Number of Pages in this Booklet : 32

Number of Questions in this Booklet : 19

Instructions for the Candidates

- Write your roll number in the space provided on the top of this page.
- Answer to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

No Additional Sheets are to be used.

- At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
 - To have access to the Question Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
 - Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the Question Booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
- Read instructions given inside carefully.
- One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
- If you write your Name, Roll Number, Phone Number or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, or use abusive language or employ any other unfair means, you will render yourself liable to disqualification.
- You have to return the test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
- Use only Blue/Black Ball point pen.**
- Use of any calculator or log table etc., is prohibited.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

- पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नम्बर लिखिए ।
- लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुए रिक्त स्थान पर ही लिखिये ।
इसके लिए कोई अतिरिक्त कागज का उपयोग नहीं करना है ।
- परीक्षा प्रारम्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी । पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निम्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे, जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
 - प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी कागज की सील को फाड़ लें । खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें ।
 - कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संख्या को अच्छी तरह चेक कर लें कि वे पूरे हैं । दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ/प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात् किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले लें । इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे । उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा ।**
- अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें ।
- उत्तर-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है ।
- यदि आप उत्तर-पुस्तिका पर नियत स्थान के अलावा अपना नाम, रोल नम्बर, फोन नम्बर या कोई भी ऐसा चिह्न जिससे आपकी पहचान हो सके, अंकित करते हैं अथवा अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं, या कोई अन्य अनुचित साधन का प्रयोग करते हैं, तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित किये जा सकते हैं ।
- आपको परीक्षा समाप्त होने पर उत्तर-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें ।
- केवल नीले/काले बाल प्वाइंट पेन का ही इस्तेमाल करें ।
- किसी भी प्रकार का संगणक (केलकुलेटर) या लॉग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है ।

COMPARATIVE STUDY OF RELIGIONS

धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन

PAPER – III

प्रश्नपत्र – III

Note : This paper is of **two hundred (200)** marks containing **four (4)** sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

नोट : यह प्रश्नपत्र **दो सौ (200)** अंकों का है एवं इसमें **चार (4)** खण्ड हैं । अभ्यर्थियों को इनमें समाहित प्रश्नों के उत्तर अलग से दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है ।

SECTION – I

खण्ड – I

Note : This section consists **two** essay type questions of **twenty (20)** marks each, to be answered in about **five hundred (500)** words each. **(2 × 20 = 40 Marks)**

नोट : इस खण्ड में **बीस-बीस** अंकों के **दो** निबन्धात्मक प्रश्न हैं । प्रत्येक का उत्तर लगभग **पाँच सौ (500)** शब्दों में अपेक्षित है । **(2 × 20 = 40 अंक)**

1. Write a brief essay on the bhakti and reform movements in Hinduism.
हिंदू धर्म में भक्ति एवं सुधार आन्दोलनों पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए ।

OR / अथवा

Write an essay on basic doctrines of Jainism.
जैनधर्म के मूलभूत सिद्धान्तों पर एक निबन्ध लिखिए ।

OR / अथवा

Discuss in detail the contribution of Buddhism to Indian Culture.
भारतीय संस्कृति के लिए बौद्धधर्म के योगदान पर विस्तार से प्रकाश डालिए ।

OR / अथवा

Write an essay on the central importance of the “Sermon on the Mount” for Christianity.

‘गिरि उपदेश’ का ईसाई मत में केन्द्रीय महत्त्व पर एक निबन्ध लिखिए ।

OR / अथवा

Discuss the development of fine arts under the Abbasids.
अब्बासी कालीन ललित कलाओं के विकास की चर्चा कीजिए ।

OR / अथवा

Find out similarities and differences in the doctrine of Guru Granth and Dasam Granth.

गुरुग्रंथ और दशम ग्रंथ के सिद्धान्त में समानता और भिन्नता का वर्णन करें ।

2. Describe the teachings of Mahābhāratā.
महाभारत की शिक्षाओं का वर्णन कीजिए ।

OR / अथवा

Assess the contribution of Acharya Tulasi as an educational reformer.
शैक्षिक सुधारक के रूप में आचार्य तुलसी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए ।

OR / अथवा

Discuss the doctrine of Four-Noble Truths in detail as propounded in Buddhism.
बौद्धधर्म में प्रतिपादित चार आर्य सत्यों के सिद्धान्त का विस्तार से विवेचन कीजिए ।

OR / अथवा

Write an essay on Liberation Theology and the Bible.
मुक्ति धर्मशास्त्र (लिबरेशन थियोलोजी) और बाइबल पर एक निबन्ध लिखिए ।

OR / अथवा

Assess the contribution of Imam-al-Ghazali as a Muslim thinker.
मुस्लिम विचारक के रूप में इमाम अल-गजाली के योगदान का मूल्यांकन कीजिए ।

OR / अथवा

Describe in your words cause and effect of martyrdom of Guru Arjan Dev.
गुरु अर्जनदेव की शहादत के कारण और नतीजे अपने शब्दों में वर्णन करें ।

SECTION – II

खण्ड – II

Note : This section contains **three (3)** questions from each of the electives/specializations. The candidate has to choose only **one** elective/specialization and answer all the **three** questions contained therein. Each question carries **fifteen (15)** marks and is to be answered in about **three hundred (300)** words. **(3 × 15 = 45 Marks)**

नोट : इस खण्ड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता से **तीन (3)** प्रश्न हैं । अभ्यर्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता को चुनकर उसी के तीनों प्रश्नों के उत्तर देने हैं । प्रत्येक प्रश्न **पन्द्रह (15)** अंकों का है व उसका उत्तर लगभग **तीन सौ (300)** शब्दों में अपेक्षित है । **(3 × 15 = 45 अंक)**

Elective – I / ऐच्छिक – I

Hinduism / हिन्दूधर्म

3. State the basic principles of the Sāṅkhya Philosophy.
सांख्य दर्शन के मूल सिद्धान्तों का विवरण दीजिए ।
4. Write a note on the basic doctrines of Saivism.
शैव मत के मूल सिद्धान्तों पर एक नोट लिखिए ।
5. Discuss the contributions of Ramakrishna Mission.
रामकृष्ण मिशन के योगदान पर प्रकाश डालिए ।

OR / अथवा

Elective – II / ऐच्छिक – II

Jainism / जैन धर्म

3. Discuss the concept of Guru in Jainism
जैनधर्म में गुरु की अवधारणा का विवेचन कीजिए ।
4. Throw light on the concept of soul according to Jainism.
जैनधर्म के अनुसार आत्मा के स्वरूप पर प्रकाश डालिए ।

5. Explain the idea of sin and goodbye according to Jainism.
जैनधर्म के अनुसार पाप और पुण्य के विचारों की व्याख्या कीजिए ।

OR / अथवा

Elective – III / ऐच्छिक – III

Buddhism / बौद्ध धर्म

3. Who is Bodhisattva ? Throw light on his role as depicted in Mahāyāna sect.
बोधिसत्त्व कौन है ? महायान सम्प्रदाय में वर्णित उसकी भूमिका पर प्रकाश डालिए ।
4. Discuss the contributions of Buddhaghosa in the development of Buddhism.
बौद्धधर्म के विकास में बुद्धघोस के अवदानों का विवेचन कीजिए ।
5. Describe the main principles of the śūnyavāda philosophy of Buddhism.
बौद्धधर्म के शून्यवाद दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का विवेचन कीजिए ।

OR / अथवा

Elective – IV / ऐच्छिक – IV

Christianity / ईसाई धर्म

3. How Old Testament and New Testament are related according to Christianity.
ईसाई धर्म के अनुसार पुराना विधान (ओल्ड टेस्टामेंट) और नया विधान (न्यू टेस्टामेंट) आपस में किस प्रकार सम्बंधित हैं ?
4. Explain the Seven Sacraments of Christianity.
ईसाई मत के सात संस्कारों की व्याख्या कीजिए ।
5. Describe how Bible is an inspired Scripture.
बाइबल किस प्रकार से देवप्रेरित धर्म ग्रंथ है, इसका वर्णन कीजिए ।

OR / अथवा

Elective – V / ऐच्छिक – V

Islam / इस्लाम धर्म

3. Write a note on the historical importance of the Hudaibiyah pact.
हुदैबियह संधि के ऐतिहासिक महत्त्व पर नोट लिखिए ।
4. Describe the main features of the Qadiriya Sufi Order.
कादिरियाह सूफी पद्धति की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए ।
5. Discuss the contribution of Sir Syed Ahmad Khan as an educationist.
शिक्षाविद् के रूप में सर सैय्यद अहमद खान के योगदान का वर्णन कीजिए ।

OR / अथवा

Elective – VI / ऐच्छिक – VI

Sikhism / सिक्ख धर्म

3. Write an essay on the development of Gurdwara institution.
गुरुद्वारा संस्था के विकास पर लेख लिखें ।
4. Explain the event of creation of Khalsa.
खालसा पंथ के प्रकाश की घटना का वर्णन कीजिए ।
5. Write a life sketch of Guru Gobind Singh.
गुरु गोबिंद सिंह जी के जीवन का विवरण दीजिए ।

SECTION – III

खण्ड – III

Note : This section contains **nine (9)** questions of **ten (10)** marks each, to be answered in about **fifty (50)** words. **(9 × 10 = 90 Marks)**

नोट : इस खण्ड में **दस-दस (10-10)** अंकों के **नौ (9)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **पचास (50)** शब्दों में अपेक्षित है । **(9 × 10 = 90 अंक)**

6. Describe the subject matter of upanisads.
उपनिषदों की विषयवस्तु का निरूपण कीजिए ।

7. Write a note on the Teachings of Risabhadeo
ऋषभदेव की शिक्षाओं पर एक टिप्पणी लिखिए ।

8. Discuss the role of Vasubandhu in spread of Buddhism.

बौद्ध धर्म के विस्तार में वसुबन्धु की भूमिका का विवेचन कीजिए ।

9. Explain the doctrine of the Trinity according to Christianity.

ईसाई मत में त्रित्व सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए ।

10. Discuss the philosophical ideas of Ibn Rushd.

इब्न रुश्द के दार्शनिक विचारों की चर्चा कीजिए ।

11. Write an essay on the life and teachings of Guru Nanak Dev.
गुरु नानक देव जी के जीवन और शिक्षाओं पर निबंध लिखें ।

12. Describe the main features of Animism.
जीववाद के मुख्य लक्षणों का वर्णन कीजिए ।

13. Write an introductory note on any two scriptures of the world major religions.
विश्व के प्रमुख धर्मों के किन्हीं दो धर्मशास्त्रों पर परिचयात्मक टिप्पणी लिखिए ।

14. Discuss the concept of life after death in Indian religious traditions.
भारतीय धार्मिक परम्पराओं में मृत्यु के बाद जीवन की अवधारणा पर प्रकाश डालिए ।

SECTION – IV
खण्ड – IV

Note : This section contains **five (5)** questions of **five (5)** marks each based on the following passage. Each question should be answered in about **thirty (30)** words.

(5 × 5 = 25 Marks)

नोट : इस खण्ड में निम्नलिखित परिच्छेद पर आधारित **पाँच (5)** प्रश्न हैं । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **तीस (30)** शब्दों में अपेक्षित है । प्रत्येक प्रश्न **पाँच (5)** अंकों का है ।

(5 × 5 = 25 अंक)

“The Brahmos insist that God is formless. Suppose they do. It is enough to call on him with sincerity of heart. If the devotee is sincere, then God, who is the Inner Guide of all, will certainly reveal to the devotee his true nature.

“But it is not good to say that what we ourselves think of God is the only truth and what others think is false; that because we think of God as formless, therefore, he is formless and cannot have any form; that because we think of God as having form, therefore he has form and cannot be formless. Can a man really fathom God’s nature ?

“Hindus, Mussalmans, Brahmos, Saktas, Vaishnavas, Saivas, all quarrel with one another. They haven’t the intelligence to understand that he who is called Krishna is also siva and the Primal Sakti, and that it is. He again, who is called Jesus and Allah. There is only one Rama, and He has a thousand names’.

“Truth is one; only it is called by different names. All people are seeking the same Truth; the variance is due to climate, temperament, and name. A lake has many ghats. From one ghat the Hindus take water in jars and call it ‘jal’. From another ghat the Mussalmans take water in leather bags and call it ‘pani’. From a third the Christians take the same thing and call it ‘water’. Suppose someone says that the thing is not ‘jal’ but ‘pani’, or that it is not ‘pani’ but ‘water’, or that it is not ‘water’ but ‘jal’. It would indeed be ridiculous. But this very thing is at the root of the friction among sects, their misunderstanding and quarrels. This is why people injure and kill one another and shed blood in the name of religion. But this is not good, everyone is going toward God. They will all realize Him if they have sincerity and longing of heart.

ब्रह्मसमाजी इस बात पर जोर देते हैं कि ईश्वर निराकार है, मान लें कि वे ऐसा करते हैं तब यह पर्याप्त है कि उसको वे निष्कपट हृदय से स्वीकार करें, अगर भक्त सच्चा है तो ईश्वर जो सबका आन्तरिक मार्गदर्शक है निश्चित रूप से वह अपने यथार्थ स्वरूप को भक्त के समक्ष प्रगट करेगा ।

लेकिन यह कहना उचित नहीं है कि जो कुछ ईश्वर के विषय में हम सोचते हैं सिर्फ वही सच्चाई है और जो दूसरे लोग सोचते हैं वह गलत हैं, चूँकि हम सोचते हैं कि ईश्वर निराकार है इस लिए वह मात्र निराकार है और वह कोई आकार धारण नहीं कर सकता । इसके विपरीत जब हम ईश्वर को साकार मानते हैं तब हम यह समझते हैं कि वह एकमात्र साकार है, वह निराकार नहीं हो सकता । क्या मनुष्य वास्तव में ईश्वर के स्वरूप को माप सकता है ।

मैं देखता हूँ कि जो लोग धर्म के विषय में बात करते हैं, वे आपस में निरन्तर झगड़ते रहते हैं । हिन्दू, मुसलमान, ब्रह्मसमाजी, शाक्त, वैष्णव, शैव सभी परस्पर झगड़ते रहते हैं । उनकी समझ के बाहर है कि जो कृष्ण है वही शिव और आदि शक्ति है और वही ईसा और अल्लाह है । केवल एक राम है जिसके हजारों नाम हैं ।

सत्य एक है जो विभिन्न नामों से पुकारा जाता है । सभी लोग इसी सत्य की खोज कर रहे हैं । असंगति केवल वातावरण, स्वभाव एवं नाम के कारण है । एक झील के अनेक घाट होते हैं । एक घाट से हिन्दू पात्र में पानी लेता है और उसे ‘जल’ कहता है, दूसरे घाट से मुसलमान मशक में जल लेता है और उसे

‘पानी’ कहता है, तीसरे घाट से ईसाई उसी चीज को लेता है और उसे ‘वाटर’ कहता है । मान लें कि कोई कहता है कि वह पदार्थ जल नहीं है बल्कि पानी है अथवा वह पानी नहीं है बल्कि वाटर है अथवा वह वाटर नहीं है बल्कि जल है । यथार्थतया यह हास्यास्पद होगा । लेकिन यही चीज विभिन्न सम्प्रदायों में असंगति, गलतफहमी और झगड़ों का मूल कारण है । इसी कारण धर्म के नाम पर लोग एक दूसरे को घायल करते हैं, हत्या करते हैं और खून बहाते हैं किन्तु यह सर्वथा अनुचित है । हर व्यक्ति को ईश्वर के पास जाना है, वे सभी उसका अनुभव करेंगे अगर उनके पास सच्चाई और तीव्र अभिलाषा है ।

15. Describe the Brāhmos concept of God.

ईश्वर के विषय में ब्रह्म समाजियों की अवधारणा का वर्णन कीजिए ।

16. Discuss whether it is possible to fathom the nature of god.

व्याख्या कीजिए कि क्या ईश्वर की प्रकृति को मापा जा सकता है ?

17. Describe the causes of bitterness between followers of different religions.

विभिन्न धर्मानुयायियों के बीच कड़वाहट के कारणों का विवरण दीजिए ।

18. Why is it necessary to have the intelligence to understand the core of religion ?

धर्म के मर्म को समझने के लिए विवेक का होना क्यों आवश्यक है ?

19. Describe the main purpose of religion.

धर्म के प्रमुख उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए ।

Space For Rough Work

FOR OFFICE USE ONLY	
Marks Obtained	
Question Number	Marks Obtained
1	
2	
3	
4	
5	
6	
7	
8	
9	
10	
11	
12	
13	
14	
15	
16	
17	
18	
19	

Total Marks Obtained (in words)

(in figures)

Signature & Name of the Coordinator

(Evaluation)

Date